शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 21-26
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. कौशल कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, माउंट कार्मेल महाविद्यालय, स्वायत्त, बेंगलुरु.

Corresponding Author :

डॉ. कौशल कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, माउंट कार्मेल महाविद्यालय, स्वायत्त, बेंगलुरु.

नागार्जुन की कविताओं में चित्रित बिंब और प्रतीक : एक अनुशीलन

सार : प्रगतिशील धारा के आधार कवि नागार्जुन का काव्य संसार व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण है। नागार्जुन की कविताओं में जहाँ एक तरफ जन सरोकारी मुद्दों का यथार्थवादी चित्रण है वहीं दूसरी ओर सामाजिक विद्रूपता और राजनीति में उपस्थित भ्रष्टाचार के प्रति गहरा अमर्ष और व्यंग्य का भी नैसर्गिक चित्रण है। इन विषयों के अतिरिक्त काव्य में प्रकृति के विविध तत्वों के चित्रण में सुंदर शिल्प संयोजन का विधान तो परिलक्षित होता ही है साथ ही काव्य को प्रवाहपूर्ण बनाने के उद्देश्य से 'बिंब और प्रतीक' का भी सुंदर चित्रण हुआ है। काव्य 'बिंब' कवि की मनस संकल्पना का भावपूर्ण चित्र है जो काव्य को प्रवाह पूर्ण बनाता है वहीं 'प्रतीक' बिंब का रूढ़ रूप है जो उसकी अभिव्यक्ति को जीवंत करता है। मार्क्सवादी विचार धारा से सरोकार रखने वाले जन कवि नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति के उपादान के चित्रण में सुंदर 'बिंब और प्रतीक' की अभिव्यक्ति हुई है। प्रस्तुत आलेख में जनकवि नागार्जुन द्वारा रचित कविताओं में प्रकृति के नैसर्गिक चित्रण में प्रयुक्त बिंब और प्रतीक का संक्षिप्त विश्लेषण हुआ है। यहाँ हिंदी कविताओं के साथ चयनित मैथिली कविताओं में प्रयुक्त बिंबों का भी संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द – बिंब, प्रतीक, कल्पना, नैसर्गिक, मनस, भाव-गर्भित, भावोत्पादन, शिल्प-संयोजन, उपादान , मैथिल, रूप-रस-स्पर्श, संवेदना, काव्यानुभूति, प्रतिमान आदि।

भूमिका - हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में प्रगतिशील काव्य रचनाओं के सृजन का प्रारंभ छायावाद काल के अवसान के बाद अर्थात 1936 के आस-पास का माना जाता है। नागार्जुन को प्रगतिशील काव्य धारा का आधार कवि माना जाता है। नागार्जुन का काव्य संसार बहुत ही व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। इसके कई कारण हैं यथा-कवि का संघर्षमय-यायावरी जीवन, मार्क्सवादी विचारधारा की गहरी समझ, सामाजिक विद्रूपता के प्रति अमर्ष का भाव एवं कलुषित राजनीति के प्रति व्यंग्य, जनवादी सरोकार से समन्वय, आँचलिकता से लगाव,

सामान्य जन-पीड़ा के प्रति गहरी सहानुभूति तथा प्रकृति से लगाव आदि है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रगतिशील धारा के सशक्त हस्ताक्षर कवि नागार्जुन के काव्य में विविधता दृष्टिगोचर होती है। नागार्जुन की कविताओं में मार्क्सवादी चेतना का प्रभाव परिलक्षित होता है तथापि मार्क्सवाद के प्रभाव से इतर नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति के समस्त उपादान का भी चित्रण है। कवि अपनी कविताओं में प्रकृति की नैसर्गिक सुंदरता के चित्रण के अतिरिक्त, काव्य में सहज प्रवाह को गति प्रदान करने के लिए काव्य बिंबों, कल्पनाशीलता और प्रतीकों के प्रयोग द्वारा सुंदर शिल्प संयोजन की सर्जना करते हैं। प्रस्तुत आलेख द्वारा नागार्जुन की चयनित कविताओं में चित्रित 'बिंब और प्रतीक' के यथार्थवादी विश्लेषण का संक्षिप्त प्रयास किया गया है।

मूल आलेख - बिंब अँग्रेजी के शब्द 'इमेज' का पर्याय है। बिंब को पाश्चात्य काव्य आलोचना की कसौटी का प्रमुख उपकरण माना जाता है। हिंदी में बिंब का सामान्य अर्थ 'छाया/प्रतिकृति अथवा प्रतिबिंब' है। सामान्यतः कविगण, कविता में सहज प्रवाह और निरंतरता को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से 'बिंब और प्रतीक' का प्रयोग करते हैं। कवि अपनी कारयित्री प्रतिभा द्वारा काव्य में भाव-गर्भित चित्र उपस्थित करता है जो काव्य में 'बिंब' के रूप में चित्रित किया जाता है। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन अवलोकनार्थ हेतु द्रष्टव्य है - 'कवि की चित्र विधायनी शक्ति, कल्पना को भाव-गर्भित चित्रों अर्थात बिंबों में परिणत करती है ।'[1]

तात्पर्य यह है कि सृजनशील कवि अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा द्वारा जब काव्य में निरंतरता एवं सहज प्रवाह उत्पन्न करने के लिए अपनी कल्पना द्वारा जिस भावगर्भित चित्र को काव्य में उपस्थित करता है वही 'बिंब' है। अतः बिंब एक प्रकार से कवि की मनस शक्ति अथवा कल्पना द्वारा शब्दों के माध्यम से उपजा एक भाव-चित्र है। यहाँ एक अन्य चित्रण द्रष्टव्य है –"बिंब का जन्म कवि की अनुभूति से तब होता है जब वह अपनी रागात्मक कल्पना से अनुप्राणित हो कर उसे रुपाकर करता है।"[2]

अर्थात काव्य सृजन में रत कवि जब रागात्मक कल्पना से अनुप्राणित हो अपनी अनुभूत संवेग भाव को शब्द रूप में आकार प्रदान करता है तो बिंब का अभ्युदय होता है। हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक और विद्वान डॉ. नगेन्द्र द्वारा 'बिंब' की परिभाषा अवलोकनार्थ हेतु द्रष्टव्य है- "... बिंब एक प्रकार की मानविक प्रतिकृति अथवा मानस चित्र है और 'काव्य बिंब' शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी (विशिष्ट) मानस छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।"[3]

विभिन्न साहित्यकारों ने काव्य में बिंब, प्रतीक और कल्पना के उद्देश्य का विश्लेषण किया है। काव्य में 'बिंब' की उपस्थिति एवं प्रयोजन की सार्थकता को भी स्पष्ट किया गया है। इस संदर्भ में प्रस्तुत कथन द्रष्टव्य है- " बिंब अमूर्त भावों एवं विचारों को मूर्त रूप प्रदान करता है। .... बिंब का उद्देश्य चित्रण शक्ति द्वारा पाठक या श्रोता के कल्पना भाव – संसार में भावोत्पादन एवं भावोदवेलन करना है।"[4]

'बिंब और प्रतीक' के प्रयोजन को स्पष्ट करने के अतिरिक्त कतिपय पाश्चात्य विद्वानों द्वारा काव्य शिल्प-संयोजन में बिंब की उपयोगिता का विश्लेषण भी किया गया है। बिंब का संबंध काव्य के शिल्प पक्ष से है। यह आधुनिक साहित्य में पश्चिमी आलोचना के सैद्धांतिक विवेचन-विश्लेषण का प्रमुख उपकरण है। 'बिंब' काव्य शिल्प का ऐसा उपकरण है जिसके बिना काव्यानुभूति की अभिव्यक्ति एवं भाव संप्रेषण पूर्ण नहीं हो सकता। 'बिंब, प्रतीक और कल्पना' काव्य के अंतर्निहित तत्व है। 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना' काव्य के प्रमुख उपादान है।

हालाँकि कतिपय साहित्यिक आलोचकों ने 'बिंब' को अलंकार के रूप में स्वीकार किया है किन्तु 'बिंब', अलंकार की भाँति काव्य की वाह्य साज-सज्जा का उपकरण मात्र ही नहीं वरन काव्यानुभूति और भाव का निरुपण है। हिंदी के प्रसिद्ध आलोचकों द्वारा जहाँ काव्य आलोचना के लिए रस, अलंकार, वक्रोक्ति आदि को उपकरण माना गया है वहीं पाश्चात्य आलोचकों ने 'बिंब और प्रतीक' को आलोचना के आधुनिक प्रतिमान के रूप में विकसित किया है। इस संदर्भ में यह कथन अवलोकनार्थ हेतु प्रस्तुत है- "काव्य जगत में बिंब सिद्धांत को

प्रतिष्ठित करने वाले विद्वानों में सी. डी लेविस, एजर पॉउंड, टी.ई , ह्यूम,रिचर्ड एलडिंगटन मुख्य है। लेविस के अनुसार – "काव्य बिंब, न्यूनाधिक रूप में एक संवेदनात्मक (ऐंद्रिय) शब्द चित्र है जो एक सीमा तक रूपात्मक होता है और अपने संदर्भ में मानवीय अनुभूतियों से आप्लावित रहता है। साथ ही बिंब विशेष काव्यात्मक संवेग को पाठक तक संप्रेषित करता है।"[5]

आम तौर पर काव्य में परिलक्षित बिंब को एक काल्पनिक चित्र माना जाता है जिसमें भाव,रंग-रूप आदि का सन्निवेश होता है। मनोविज्ञान में वस्तुतः यह इंद्रियबोध ही है जो कल्पना और स्मृति से जुड़ा होता है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सी. डब्लयू का कथन द्रष्टव्य है – "बिंब वे सचेतन स्मृतियाँ हैं जो मूल प्रेरक की अनुपस्थिति में किसी पूर्व -प्रत्यक्ष (अतीत अनुभव) को पूर्णतः अथवा अंशतः उत्पन्न करती है।"[6]

मूलतः मार्क्सवादी विचारधारा से सरोकार रखने वाले जनकवि का काव्य फलक व्यापक है। वे प्रकृति के चितेरे कवि भी है और जनवादी भी हैं। प्रस्तुत आलेख में कतिपय हिंदी कविताओं और मैथिल कविताओं में वर्णित बिंब का संक्षिप्त विश्लेषण हुआ है।

सं 1958 में बाबा नागार्जुन के प्रकाशित काव्य संग्रह 'सतरंगे पंखोवाली' में संकलित कविता 'बहुत दिनों के बाद' में काव्य बिंब के समस्त उपादान परिलक्षित होते हैं। यहाँ यह अवलोकनार्थ हेतु प्रस्तुत है – "बहुत दिनों के बाद / अब की मैंने जी-भर देखी / पकी- सुनहली फसलों की मुस्कान / बहुत दिनों के बाद – **चाक्षुषी बिंब** ..... अब की मैं जी- भर सुन पाया / धान कूटती किशोरियों की कोकिल कंठी तान /..... **कर्णेन्द्रिय बिंब** ..... बहुत दिनों के बाद अब की मैंने जी-भर सूँघे / मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताजे – टटके फूल/..... **घ्राणेंद्रिय बिंब** ..... बहुत दिनों के बाद / अब की मैं जी-भर छू पाया / अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल.....**स्पर्श बिंब** .....बहुत दिनों के बाद / अब की मैंने जी- भर तालमखाना खाया / गन्ने चूसे जी- भर.....**रसनेंद्रिय बिंब** .....बहुत दिनों के बाद / अब की मैंने जी-भर भोगे / गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर बहुत दिनों के बाद।"[7]

साहित्य में बिंब के वर्गीकर को लेकर स्पष्ट मत का अभाव है। बिंब के वर्गीकरण में पूर्णता और आदर्श का इस संबंध में बिंबवाद के जनक सी. डी. लेविस के कथन विचार गौर करने योग्य है- " ... बिंब काव्य की रचना-प्रक्रिया से इतने घनिष्ठ रूप से संयुक्त होते हैं कि उन्हें कविता से अलग करके उसके भेद-प्रभेदों पर चर्चा करना उचित नहीं।"[8]

हालाँकि इसके बावजूद कार्य विषय-वस्तु, सर्जक कल्पना और ऐंद्रिय आधारों पर साहित्यिक संदर्भ में विभिन्न विद्वानों द्वारा बिंब के कई भेद किए गए हैं। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नगेन्द्र के द्वारा बिंब के कई प्रकारों के उल्लेख किये गए हैं। अनुभूति के आधार पर सरल, मिश्र और जटिल बिंब हैं। इसके अतिरिक्त खंडित बिंब के भी उल्लेख हैं। सर्जक कल्पना के आधार स्मृति और कल्पित बिंबों के उल्लेख हैं।

नागार्जुन द्वारा रचित काव्य संग्रह 'युगधारा' काव्य संग्रह में संकलित कविता 'बादल को घिरते देखा है' में भी काव्य बिंब के नैसर्गिक चित्रण दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ एक उदाहरण द्रष्टव्य है - ..... " बादल को घिरते देखा है ।/ अमल धवलगिरि के शिखरों पर / बादल को घिरते देखा है ।/ छोटे -छोटे मोती जैसे उसके शीतल तुहिन कणों को / मानसरोवर के उन स्वर्णिम / कमलों पर गिरते देखा है। / बादल को घिरते देखा है।"[9] प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा जनकवि द्वारा प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का चित्रण हुआ है। इन पंक्तियों में **'चाक्षुष बिंब'** का प्रयोग हुआ है।

नागार्जुन रचित काव्य संग्रह 'युगधारा' (सं1939) में संकलित कविता 'रजनीगंधा' में **'भाव बिंब अथवा अनुभूति परक बिंब**, **कर्णेन्द्रिय बिंब और घ्राणेंद्रिय बिंब'** का सुंदर चित्रण हैं जो यहाँ अवलोकानार्थ हेतु प्रस्तुत है – "तुम खिलो रात की रानी !/ हो म्लान भले यह जीवन और जवानी / तुम खिलो रात की रानी ! / प्रहरी -परिवेष्टित इस बंदीशाला में / मैं सड़ूँ सही, पर ताजी रहे कहानी / तुम खिलो रात की रानी ! / यह प्रहरी के बूटों

की कर्कश टापें..... इतने में अनुपम सुवास से सुरभित/ शीतल समीर का झोंका आता ..... यह भीनी-भीनी सारी रात का महकना ..... पुलकित होते तन-मन / जगती है वाणी / जय-जय जय-जय कल्याणी!"[10]

हिंदी कविताओं के अतिरिक्त **मैथिल** भाषा की कविताओं में, विशेषकर काव्य संग्रह **'पत्रहीन नग्न गाछ'** में संकलित कई कविताओं में बिंबों का प्रभावपूर्ण चित्रण है। यहाँ एक उदाहरण द्रष्टव्य है – " **कृत्तिका नक्षत्रमे शशि- कोदरिकट्टा मेघसँ / झगड़ा करैत छलाह** ..... (हिंदी अनुवाद) कविता ' कृत्तिका नक्षत्र में' – "कृतिका नक्षत्र में शशि- / कुदालकटे-से बादलों से /झगड़ रहे थे मैं टहलता धनखेतों की मेड़ पर / हाथ से छूकर देखा तो / स्वर्णकेशी सुंदरी की अलकावली-सी लगीं / क्वार की ओस से भीगी बालियाँ / याद हो आए मुझे केसर कश्मीर के / वे शिरीष के फूल / अहा ! कोस के कोस धान के खेत - / हरियाली के सागर की तरह रह -रह हिलकोरे मारते / उस पर अमृत किरण की मृदुल आभा / कुछ फिसलती-सी / हरितवसना शस्यलक्षित के अंचलोदित पत्र में / कृत्तिका नक्षत्र में"[11]

प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त बिंब के द्वारा काव्य के सहज प्रवाह को चित्रित किया गया है। कृत्तिका नक्षत्र के नैसर्गिक स्वरुप के चित्रण के साथ **'चाक्षुष बिंब, स्पर्श बिंब और स्मृति बिंब'** का सहज पुट परिलक्षित हो रहा है। जनकवि खेत की मेड़ पर खड़े, स्वर्ण (पीत) आभा युक्त धान की बालियों को निहार रहे हैं जिसके उपर क्वार मास के ओस की बूँद पड़ी है और हाथ से स्पर्श कर रहे हैं। पीत (पीली) आभा से युक्त धान की बालियों पर क्वार मास के ओस की बूँदों को देख कर कवि की स्मृति में कश्मीर के पीत वर्णी आभा से युक्त केसर और शिरीष के फूलों की चेतना जागृत हो रही है।

पाश्चात्य विद्वानों ने 'प्रतीक' के लिए अँग्रेजी के शब्द 'Symbol' का प्रयोग किया है। जिसका मूल अर्थ संकेत, चिन्ह, प्रतिरूप अथवा निशान है। 'प्रतीक' शब्द के गूढ़ अर्थ और विविधता के संबंध में कतिपय पाश्चात्य विद्वान के मत भी भिन्न है। यहाँ उदाहरणार्थ हेतु द्रष्टव्य है – " Symbol may be best defined as a special kind of sign." वहीं टिंडल संकेत एवं प्रतीकों में भेद मानते हुए कहते हैं कि -... a sign is an exact reference to something definite and symbol is an exact reference to something indefinite."[12]

यहाँ प्रतीक की प्रमुख विशेषताओं और गुण का संक्षिप्त उल्लेख हैं जो अवलोकनार्थ हेतु प्रस्तुत है – " प्रायः सभी विद्वानों ने प्रतीक को मूलतः एक चिन्ह माना है जो अपनी क्रियाशीलता में चिन्हत्व की सीमाओं को तोड़कर एक नया अर्थवान व्यक्तित्व विकसित कर लेता है। इस विषय में लैंगर ने ठीक ही कहा है कि प्रतीक वस्तुओं की "प्राक्सी" नहीं है वरन वस्तुओं के संप्रत्ययों के संवाहक हैं ।...प्रतीक की मुख्य विशेषता यह है कि वह मौन रह कर ही संप्रेषणीयता को प्रभावी बनाते हैं ।... प्रतीक की शैली ही सांकेतिक है। वह अपनी इसी विशेषता के कारण साहित्य में एक अलग पहचान बनाते हैं ।... प्रतीक का अपरिपक्व रूप बिंब है और बिंब की रुढ़ होकर प्रतीक बन जाते हैं। प्रतीक की यह विशेषता है कि वह प्रचालित बिंबों को अपने में समेट कर जीवंत और सार्थक बना देता है।"[13]

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नगेन्द्र ने प्रतीक को तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त किया है –" सृजन के प्रतीक, ध्वंस के प्रतीक तथा काम या श्रृंगार के प्रतीक। ... इन तीन प्रतीक-वर्गों के अंतर्गत प्रतीक के विविध रूपों को समाविष्ट किया जा सकता है- भावनात्मक प्रतीक, वेदनात्मक प्रतीक, प्राकृतिक प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, आध्यात्मिक प्रतीक, श्रृंगार प्रतीक एवं शब्द शक्ति के प्रतीक।"[14]

प्राच्य वाङमय साहित्य में भी 'प्रतीक' के संदर्भ में विभिन्न मतों का विश्लेषण परिलक्षित होता है। अमरकोश के अनुसार –" अंग प्रतीकोङ्गयवोड्पवनोडय कलेवरम ! अर्थात प्रतीक का अर्थ अंग एवं कलेवर के रूप में है।.....तदभिन्नत्वे सति उद्बोधकत्वं प्रतीकत्वम्' कहा है, अर्थात प्रतीक बोध्य वस्तु से भिन्न होते हुए उस वस्तु का बोध कराता है।"[15] वहीं पाश्चात्य विद्वान कार्लाइल के मत भी विचार करने योग्य है - " कार्लाइल की धारणा

थी कि प्रतीक में भाव गोपन के साथ भाव-प्रकाशन भी रहता है। प्रतीक का प्रयोग अनादि काल से संप्रेषण के साधन के रूप में किया जाता है।"[16]

साहित्य में काव्य सौंदर्य की सृष्टि का प्रमुख कारक 'प्रतीक' है। हालाँकि काव्य शिल्प की दृष्टि से विचार किया जाए तो यह ज्ञात होता है कि काव्य में प्रयुक्त शब्द स्वयं ही भावात्मक भाव का संप्रेषण करता है तथापि काव्य 'प्रतीक' विशिष्ट सौंदर्य और संकेत का निरूपण एवं संप्रेषण भी करता है। प्रतीक के द्वारा कवि कुछ अनकही या अनछुपी बातों को संकेत के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। प्रतीक की शैली सांकेतिक होती है।

जनकवि नागार्जुन अपने समकालीन, देश में व्याप्त सामाजिक विद्रूपता और राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार को लक्ष्य कर रचनाओं में व्यंग्यपरक 'प्रतीक' को चित्रित करते हैं। एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है – " बाँझ गाय बाभन को दान हरगंगे / मन ही मन खुश है जजमान हरगंगे / ऊसर बंजर और श्मशान हरगंगे / संत विनोबा पावैं दान हरगंगे / कौआ करे गंग असनान हरगंगे / फिर हड्डी का टुकड़ा दान हरगंगे..... ठगैं तुम्हें बाबू-बबुआन हरगंगे..... भूमिहीन पावैं भुईदान हरगंगे... पावै मदद मजूर-किसान हरगंगे ..."[17]

स्वतंत्रता के बाद का क्षण और जनकवि के मन भारत के भविष्य को लेकर आशंका है। कवि भविष्य की चिंता से सशंकित अवश्य है लेकिन एक सकारात्मक दृष्टिकोण यह भी है कि पूर्व में किये क्रांतिकारियों के बलिदान और त्याग की गौरवमयी गाथा व्यर्थ नहीं होगी। जनकवि शांति और प्रगति की कामना करते हैं लेकिन यह भली-भाँति जानते हैं कि आगे का मार्ग कठिन है। कवि जनमानस के मन में काव्य प्रतीक के व्यंजनात्मक संप्रेषण द्वारा यह स्पष्ट करते हैं कि जो सुराज की कल्पना है वह भवितव्य में साकार होगी। प्रस्तुत काव्य में वर्णित शब्द 'अरुणोदय', 'सिंदूरी किरण', 'युग गंगा की धारा' आदि सुराज की कल्पना, शांति, प्रगति और उज्जवल प्रकाश के प्रतीक हैं जो संप्रेषण द्वारा जनमानस को संदेश दे रहा है। यहाँ एक उदाहरण द्रष्टव्य है – "जय अरुणोदय / जय सिंदूरी किरण सुहानी !...../ सदाबहार बसंत निकट है / शांतिपूर्ण सुखमय जीवन की खातिर यह संघर्ष हमारा / कैसे भला रुकेगी युग -गंगा की धारा .../... शुभ्र -स्वतंत्रता शांति, प्रगति के गीत गा रही / लक्ष्य स्पष्ट है, पथ कठिन / रात्रि शेष है यह , आगे दिन है / जय सिंदूरी किरण सुहानी ! / जय अरुणोदय !"[18]

निष्कर्ष – उपरोक्त लेख के आधार यह कहा जा सकता है कि जनकवि की कविताओं में 'बिंब और प्रतीक' का सहज चित्रण हुआ है। प्रकृति के सौंदर्य वर्णन से लेकर समाज और राजनीति की विसंगतियों को उजागर करने के लिए 'बिंब और व्यंग्य परक प्रतीक' की अभिव्यक्ति में कहीं कोई कृत्रिमता या छद्म शब्दों का जबरन प्रयोग नहीं है। जनकवि की हिंदी रचनाओं और मैथिल रचनाओं में 'बिंब और प्रतीक' का सहज नैसर्गिक सौंदर्य उपस्थित हैं। प्रस्तुत आलेख में बेहद सीमित और संक्षिप्त विश्लेषण के द्वारा काव्य रचनाओं में अभिव्यक्त 'बिंब और प्रतीक' का उल्लेख किया है। जनकवि का काव्य फलक बहुत व्यापक और विस्तृत हैं और अगर कोई अनुसंधान कर्ता जिज्ञासु प्रवृति के हो तो इसकी विस्तृत मीमांसा की जा सकती है।

संदर्भ सूची :

1. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या – 99.
2. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या -96.
3. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या- 97.
4. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' वही पृष्ठ संख्या -97.
5. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' वही पृष्ठ संख्या -97.
6. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' वही पृष्ठ संख्या -97.
7. नागार्जुन रचनावली-1, संपादन-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या -317.
8. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या -98.
9. नागार्जुन रचनावली-1, संपादन-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 24.

10. वही, पृष्ठ संख्या – 27.
11. नागार्जुन रचनावली-3, संपादन-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 87.
12. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या -103.
13. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या – 104.
14. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' पृष्ठ संख्या – 105.
15. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' वही पृष्ठ संख्या – 103.
16. www.egyankosh.org 'बिंब, प्रतीक एवं कल्पना तत्व' वही पृष्ठ संख्या – 102.
17. नागार्जुन रचनावली-1, संपादन-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या –227.
18. नागार्जुन रचनावली-1, संपादन-शोभाकांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वही पृष्ठ संख्या – 230.

संदर्भ-ग्रन्थ सूची :

1. डॉ. नगेन्द्र, काव्य बिंब, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. एम.एच.डी-02, आधुनिक हिंदी काव्य, इग्नू, मानविकी विद्यापीठ, नई दिल्ली।

•